दिल मजाजी और हकीकी, कहे कुरान में दोए।
ए लेसी तफावत देख के, जो रूह अर्स की होए।। १०३ ।।

झूठे और सच्चे दिलों की हकीकत कुरान में लिखी है। जो मोमिन परमधाम के होंगे, वह इस फर्क को देख लेंगे।

दिल मजाजी दुनी का, इत अबलीस पातसाह।
सो औरों दुस्मन और आपका, मारत सबकी राह।। १०४ ।।

दुनियां का दिल झूठा है और इसमें शैतान अबलीस की बादशाही है। यह दूसरों का और आपका दुश्मन है तथा सबको गुमराह करता है।

और दिल हकीकी मोमिन, सो कह्या है अर्स हक।
तरफ नहीं दिल पाक की, जित साहेब की बैठक।। १०५ ।।

मोमिनों के दिल सच्चे हैं। उनमें हक की बैठक है। जहां पारब्रह्म स्वयं बैठे हों, उस दिल की तरफ शैतान नहीं जाता।

इस्क मोमिन और दुनी का, कछू देखत हो फरक।
अब इस्क ल्यो दिल अपने, तुम दिल अर्स बुजरक।। १०६ ।।

क्या मोमिनों के और दुनियां वालों के इश्क में कुछ अन्तर दिखाई पड़ता है? तुम्हारे दिल में पारब्रह्म बैठे हैं। अब अपने ही दिल में उनसे इश्क करो।

महामत कहे ऐ मोमिनों, जो दिए थे दिल भुलाए।
फरामोस से बीच होस के, अब साहेब लेत बुलाए।। १०७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! फरामोशी ने तुम्हारे दिलों को भुला दिया था। अब उस फरामोशी से सावचेत करके धनी तुमको बुलाते हैं।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ८७६ ॥

आसिक मेरा नाम, रूह-अल्ला आसिक मेरा नाम।
इस्क मेरा रूहन सों, मेरा उमत में आराम।। १ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि हे श्यामाजी! मेरा नाम आशिक है। मेरा इश्क रूहों से है और रूहों के सुख में ही मेरा सुख है।

इलम ले चलो अर्स का, खोल द्यो हकीकत।
भूल गईयां आप अर्स को, याद देओ निसबत।। २ ।।

परमधाम की जागृत बुद्धि का तारतम लेकर दुनियां में जाओ और मोमिनों को सब हकीकत बताओ। वह खेल में जाकर अपने आपको और घर की सब हकीकत को भूल गए हैं। उन्हें पहचान कराओ कि मैं उनका धनी हूं।

इसारतें रमूजें इत की, लिखी माहें फुरमान।
सो भेज्या हाथ रसूल के, मिलाए देओ निसान।। ३ ।।

यहां की सब हकीकत को मैंने इशारतों और रमूजों में कुरान में लिखा जो रसूल साहब लेकर आए हैं। उनके गुझ (गुह्य) भेदों को ले जाकर तारतम वाणी से मिलाकर पहचान कराओ।

Nijanand App

और भेजत हों तुमकों, कहियो मूल संदेसे।
इलम ऐसा दिया तुमको, जासों उठें मुरदे।।४।।

तुम्हें इसलिए भेज रहा हूं कि घर के मूल सन्देश रूहों को देना। तुम्हें ऐसा जागृत बुद्धि तारतम का ज्ञान दिया है कि वहां के मुर्दे जीव भी जागृत हो जाएंगे।

रेहे न सकों मैं रूहों बिना, रूहें रेहे ना सकें मुझ बिन।
जब पेहेचान होवे वाको, तब सहें ना बिछोहा खिन।।५।।

हे श्री श्यामाजी! मैं रूहों के बिना नहीं रह सकता और वह भी मेरे बिना नहीं रह सकतीं। जब उनको मेरी और परमधाम की पहचान हो जाएगी तो वह एक पल के लिए भी बिछोह सहन नहीं कर सकतीं।

जब इलम मेरा पोहोंचिया, तब ए होसी बेसक।
तब साइत ना रेहे सकें, ऐसा इनों का इस्क।।६।।

जब मेरा जागृत बुद्धि का इलम उनको मिल जाएगा तो उनके सारे भ्रम मिट जाएंगे। फिर वह एक क्षण भी वहां नहीं रह सकेंगी। उनका ऐसा जोरदार इश्क है।

ए बात मैं पेहेले कही, रूहें होसी फरामोस।
मेरे इलम बिना तुम कबहुं, आए न सको माहें होस।।७।।

मैंने पहले ही रूहों को कहा था कि तुम खेल में जाकर बेसुध हो जाओगी और मेरी जागृत बुद्धि के बिना कभी होश में नहीं आओगी।

फरामोसी हम को क्या करे, फेर कह्या रूहन।
हम अरवाहें अर्स-अजीम की, असल बका में तन।।८।।

तब रूहों ने मुझे जबाव में कहा था कि फरामोशी हमारा क्या करेगी। हम परमधाम की रूहें हैं और मूल तन हमारे अखण्ड घर में हैं।

फुरमान तुमारा आवसी, सो हम पढ़ कर।
देख इसारतें रमूजें, हम भूल जाएं क्यों कर।।९।।

जब आपका पैगाम आएगा तो उसे हम पढ़कर तथा आपकी इशारतें और रमूजों को समझकर कैसे भूल जाएंगी?

और देवें साहेदी रसूल, दे याद बातें असल।
तब क्यों रेहेवे फरामोसी, कहां जाए मूल अकल।।१०।।

फिर जब रसूल साहब मूल घर की बातें याद दिलाएंगे तो बेसुधी कैसे रहेगी? हमारी मूल बुद्धि कहां जाएगी?

सुन सुख बातें अर्स की, क्यों ना होवें हुसियार।
जो मोमिन होवे अर्स की, माहें रूहें बारे हजार।।११।।

जो अर्श के मोमिन होंगे वह परमधाम, जहां बारह हजार रूहें हैं, के सुख की बातें सुनकर सावचेत क्यों नहीं होंगे?

Nijanand App

सो तो तबहीं सुन के, होसी खबरदार।
मोमिन इत क्यों भूलहीं, सुन संदेसे परवरदिगार।। १२ ।।

वह आपके इलम को सुनकर सावचेत (सावधान) हो जाएंगे। अपने धनी के संदेश को सुनकर मोमिन माया में कैसे भूलेंगे?

आगूं से चेतन करी, एती करी मजकूर।
रूहें सुन ए सुकन, क्यों याद न आवे जहूर।। १३ ।।

आपने इतना वार्तालाप करके हमें पहले से ही सावचेत कर दिया है। फिर रूहों को यह वचन सुनकर इस सब हकीकत का पता कैसे नहीं लगेगा?

ए फुरमान पढ़े पीछे, पाई जब हकीकत।
तब फरामोसी क्यों कर रहे, क्यों भूलें ए निसबत।। १४ ।।

कुरान पढ़ने के बाद जब हकीकत मिल जाएगी तब फरामोशी कैसे रह सकती है? वह अपनी निसबत को कैसे भूल सकती हैं?

हाए हाए ऐसी हमसे क्यों होए, कैसे हम मोमिन।
सुन संदेसे क्यों भूलहीं, हक आप वतन।। १५ ।।

हाय! हाय! श्री राजजी! ऐसा हमसे कैसे होगा? हम कैसे मोमिन हैं जो आपका सन्देश सुनकर आपको, अपने को, अपने घर को भूल जाएंगे?

एता हम जानत हैं, जो सौ फरेब करो तुम।
ऐसा इस्क क्यों होवहीं, तुमको भूलें हम।। १६ ।।

ऐसा हम जानते हैं कि आप सौ बार भी हमें धोखा दो, फिर भी हमारा इश्क ऐसा कैसे हो जाएगा कि हम आपको भूल जाएं।

तुम कूदत हो अर्स में, अपने इस्क के बल।
तब सुध जरा न रहे, रहे न एह अकल।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि हे मोमिनो! तुम अपने इश्क के बल पर ही परमधाम में कूद रहे हो। जब तुम माया में जाओगो तो परमधाम की सुध और अकल नहीं रहेगी।

सो खेल मांगत हो, वास्ते इस्क देखन।
ए खेल है इन भांत का, उत इस्क न जरा किन।। १८ ।।

तुम ऐसा खेल इश्क देखने के वास्ते ही मांग रहे हो, परन्तु यह खेल इस तरह का है कि वहां इश्क जरा भी नहीं है।

ना इस्क ना अकल, ना सुध आप वतन।
ना सुध रेहेसी हक की, ए भूलोगे मूल तन।। १९ ।।

वहां न इश्क होगा, न यह अकल होगी। न अपने आपकी और न अखण्ड घर (परमधाम) की सुध होगी। तुम मुझे भूल जाओगी और अपनी परआतम को भी भूल जाओगी।

Nijanand App

कई चालें बोली जुदियां, माहें मजहब भेख अपार।
पूजें आग पानी पत्थर, इनमें खुदा हजार।। २० ।।

वहां खेल में कई प्रकार के रहन-सहन और अलग-अलग बोलियां (भाषा) होंगी। जिनके अन्दर बेशुमार धर्म, पंथ और भेष होंगे। जहां पर आग, पानी, पत्थर की पूजा होती होगी और उन्हीं में हजारों खुदा होंगे।

खाहिस से बनावहीं, अपने हाथ समार।
जुदा जुदा कर पूजहीं, जिनको नाहीं पार।। २१ ।।

वह लोग अपने हाथों से अपनी चाहना के अनुसार बेशुमार खुदा बनाते हैं और उन्हें अलग-अलग पूजते हैं।

खेल देखाऊं इन भांत का, जित झूठै में आराम।
झूठे झूठा पूजहीं, हक का न जानें नाम।। २२ ।।

मैं तुम्हें इस तरह का खेल दिखाऊंगा कि तुम झूठ में ही सच्चा आराम समझोगी। सब झूठे झूठ की पूजा करेंगे। वहां पारब्रह्म का नाम तक कोई नहीं जानेगा।

एक पैदा हुए एक होत हैं, एक होने की उमेद।
एक गए जात जाएंगे, इन विध को छल भेद।। २३ ।।

वहां एक पैदा हो गए, एक हो रहा है और एक पैदा होने वाले होंगे। इस तरह एक मर गया, एक मर रहा है और एक आज मरेगा। इस तरह का छल वाला वह संसार होगा।

देखोगे आसमान जिमी, माहें मुरदों का वास।
देत देखाई मर जात हैं, कर गिनती अपने स्वांस।। २४ ।।

वहां आसमान, जमीन में सब मुर्दों (जन्म-मरण का चक्कर होगा) का ही वास होगा। जो आज दिखाई देते हैं वह अपने सांसों की गिनती पूरी करके मर जाते हैं।

मौत सबों के सिर पर, मान लिया सबन।
चौदे तबक के खेल में, ठौर बका न पाया किन।। २५ ।।

वहां सब यह जानते हैं कि एक दिन सबको मरना है। चौदह लोकों के खेल में अखण्ड घर की प्राप्ति किसी को नहीं हुई।

खेलत सब फना में, बोलें चालें सब फना।
सब जानत आपे आपको, हम उड़सी ज्यों सुपना।। २६ ।।

सभी झूठे संसार में खेलते हैं और झूठे में ही बोलते हैं। वह सब अपने आपको जानते हैं कि हम स्वप्न जैसे हैं और मिट जाएंगे।

तब रूहों मुझ आगे कह्या, ऐसा इस्क हमारा जोर।
फरामोसी क्या करे हमको, इस्क देवे सब तोर।। २७ ।।

हे श्यामा महारानी! तब रूहों ने मुझे कहा कि हे धनी! हमारा इश्क बड़ा जोरदार है। फरामोशी हमारा क्या करेगी? उसके सारे बन्धन हमारा इश्क तोड़ देगा।

Nijanand App

ए मजकूर भई रूहन सों, मुझसों किया रब्द।
और कछुए न ल्यावें दिल में, आप इस्क के मद।। २८ ।।

इस तरह का वार्तालाप रूहों से हुआ और उन्होंने मेरे साथ रब्द किया। अपने इश्क के नशे में उन्होंने दिल में कुछ विचार नहीं किया कि हम किसके साथ बातें कर रही हैं।

बातें बोहोत करी रूहन सों, मेरा कह्या न ल्याइयां दिल।
सुन्या न आगूं इस्क के, बहस किया सबों मिल।। २९ ।।

मैंने रूहों को बहुत बातों से समझाया पर उन्होंने मेरी एक बात को भी दिल में लेकर विचार नहीं किया। अपने इश्क के नशे में सबने मिलकर बहस की।

मैं कह्या इस्क मेरा बड़ा, हादी रूहों आप माफक।
एह बात जब मैं करी, तब तुम उपजी सक।। ३० ।।

तब श्री राजजी महाराज ने कहा कि श्यामा महारानी और रूहों में जितना इश्क है, उनसे मेरा इश्क बड़ा है। जब यह बात मैंने कही तब तुम्हें संशय हो गया।

कहे हादी इस्क मेरा बड़ा, कहें रूहें बड़ा हम प्यार।
ए बेवरा बीच अर्स के, ए होए नहीं निरवार।। ३१ ।।

हे श्यामाजी! तब आपने कहा कि इश्क मेरा बड़ा है और रूहों ने कहा हमारा प्यार बड़ा है। इसका ब्यौरा (खुलासा, फैसला) परमधाम में हो ही नहीं सकता था।

क्यों होए तफावत इस्क, बैठे बीच बका में हम।
एक जरा न होए जुदागी, तो क्यों पाइए ज्यादा कम।। ३२ ।।

परमधाम में बैठकर इश्क का फैसला कैसे हो सकता है? जहां पर एक पल की भी जुदाई नहीं हो सकती तो कम और ज्यादा की पहचान कैसे हो?

पेहेले कह्या मैं तुम को, भूलोगे खेल देख।
जहां झूठे झूठा खेलहीं, उत मुझे न पाओ एक।। ३३ ।।

मैंने पहले कहा था कि तुम खेल में जाकर भूल जाओगे। वहां खेल में झूठे लोग झूठा ही खेल खेलते हैं। वहां मुझ एक को न पा सकोगी।

ए हकें अव्वल कह्या, भूल जाओगे तुम।
ना मानोगे फुरमान को, ना कछू रसूल हुकम।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज ने पहले कहा था कि तुम भूल जाओगी और कुरान में जो लिखा है उसे नहीं मानोगी। तुम्हें रसूल साहब की बातों पर और मेरे हुकम पर यकीन नहीं आएगा।

ना मानोगे संदेसे, ना मुझे करोगे याद।
झूठा कबीला करोगे, लगसी झूठा स्वाद।। ३५ ।।

मेरे सन्देश को न मानोगी और न मुझे याद ही करोगी। झूठे परिवार बनाकर बैठोगी और झूठा संसार ही अच्छा लगेगा।

Nijanand App

जानबूझ के पूजोगे, पानी पत्थर आग।
सब केहेसी ए झूठ है, तो भी रहोगे तिन लाग।। ३६ ।।

जान-बूझकर आग, पानी, पत्थर की पूजा करोगे। सब लोग कहेंगे कि यह गलत है, तो भी तुम उसी से चिपटे रहोगे।

पूजोगे सब फना को, कोई ऐसा खेल बेसुध।
ना तो क्यों पूजो मिट्टी गोबर, पर क्या करो बिना बुध।। ३७ ।।

खेल ऐसा बेसुधी का होगा कि तुम सब झूठ की पूजा करोगे। मिट्टी और गोबर की पूजा करोगे, पर जागृत बुद्धि के बिना तुम और क्या करोगे, अर्थात् बेसुधी में पूजा करोगे।

सुकन मेरा मानो नहीं, सबे भरी इस्क के जोस।
सबे बोलें नाचें कूदहीं, हमें कहा करे फरामोस।। ३८ ।।

हे श्यामाजी! इन रूहों ने अपने इश्क के जोश में मेरा कहना नहीं माना। सब नाचती-कूदती थीं और कहती थीं कि फरामोशी हमारा क्या करेगी?

हार दिया तब मैं इनों को, रब्द न किया हम।
जाए फंदियां झूठ में, नेक देखाया तिलसम।। ३९ ।।

तब मैं हारकर चुप हो गया। तब मैंने इनको थोड़ा सा तिलिस्मी (इन्द्रजाल) माया का खेल दिखाया जिसमें जाकर झूठ के फंदे में फंस गईं।

इस्क ज्यादा आपे अपना, सबों किया रबद।
फरामोसी तिलसम देखाइया, तिन किया सब रद।। ४० ।।

सभी इश्क अपना ज्यादा कहकर रब्द करती थीं। इनको थोड़ा सा इन्द्रजाल (माया का खेल) दिखाया। इस खेल ने इनके इश्क को रद्द कर दिया।

अब सों क्योंए आप को, काढ़ न सकें तिलसम।
फुरमान ले पोहोंच्या रसूल, तो भी न आवे सरम।। ४१ ।।

अब इस इन्द्रजाल (माया) के फंदे में से यह रूहें अपने आपको नहीं निकाल सकतीं। रसूल साहब कुरान के द्वारा पैगाम लेकर पहुंचे तो भी इन्हें शर्म नहीं आई।

फुरमान लिख्या इन विध का, जो पढ़ के देखें ए।
एक जरा सक न रहे, तबहीं जागें हिरदे।। ४२ ।।

कुरान में इस तरह से साफ लिखा है कि यदि कोई पढ़कर देखे तो उनके सारे संशय मिट जाएं और उनके हृदय में जागृति आ जाए।

ऐसा रसूल भेजिया, और भेज्या फुरमान।
और संदेसे रूहअल्ला, तो भी हुई नहीं पेहेचान।। ४३ ।।

ऐसे रसूल साहब और कुरान को भेजा। श्यामा महारानीजी के हाथ संदेश भेजा। फिर भी पहचान नहीं हुई।

Nijanand App

बड़ा इस्क सबों अपना, कह्या रूहों रब्द कर।
तिलसम तो देखाइया, पावने पटंतर।। ४४ ।।

सभी रूहों ने रब्द करके अपने इश्क को बड़ा बताया। इश्क का अंतर जानने के लिए यह माया का खेल दिखाया।

रूहअल्ला भेद तिलसम का, रूहों देवे बताए।
तबही रूहों के दिल से, फरामोसी उड़ जाए।। ४५ ।।

इस माया के खेल की हकीकत श्यामा महारानी रूहों को बता देंगी और उसी समय रूहों के दिल से फरामोशी उड़ जाएगी।

रूहें सुनो तुम संदेसे, मैं ल्याया तुम पर।
जो रब्द किया माहें बका, सो ल्याओ दिल भीतर।। ४६ ।।

श्यामा महारानी कहती हैं, हे रूहो! मैं तुम्हारे लिए सन्देश लाई हूं। तुमने जो परमधाम में रब्द किया था, उसे याद करो।

मुझे भेज्या हक ने, याद दीजो मेरा सुख।
तब इनों तिलसम का, उड़ जासी सब दुख।। ४७ ।।

मुझे श्री राजजी महाराज ने परमधाम के सुख की याद दिलाने के वास्ते भेजा है और कहा है कि जब यह सन्देश रूहों को मिल जाएगा तो माया का सब दुःख समाप्त हो जाएगा।

बीच बका के बैठ के, हकें कह्या यों कर।
रूहअल्ला कहियो रूहन से, भूल गइयां हक घर।। ४८ ।।

परमधाम के बीच बैठकर श्री राजजी महाराज ने इस तरह से कहा कि हे श्यामा महारानी! तुम रूहों से कहना कि तुम अपने धनी और अखण्ड परमधाम को भूल गई हो।

हाथ रसूल के भेजिया, तुम ऊपर फुरमान।
हकीकत मारफत की, तुम क्यों न करो पेहेचान।। ४९ ।।

मैंने रसूल साहब के हाथ तुमारे वास्ते कुरान भेजा है। फिर तुम हकीकत और मारफत की पहचान क्यों नहीं करते?

रब्द किया था अव्वल, सो क्यों गैयां तुम भूल।
अजूं याद दिए न आवहीं, सुन एती पुकार रसूल।। ५० ।।

तुमने इश्क का रब्द किया था। उसे क्यों भूल गई हो? रसूल साहब ने पुकार-पुकार कर कहा फिर भी तुम्हें याद नहीं आई।

और संदेसे रूहअल्ला, सुने जो अलेखे।
तो भी आंखें खुली नहीं, आए बका से हक के।। ५१ ।।

श्यामा महारानी ने इस तरह से श्री राजजी महाराज के बेशुमार सन्देश सुनकर रूहों को सुनाए तो भी मोमिनों की आंखें नहीं खुलीं कि हमारे धनी ने अखण्ड घर से सन्देश भेजे हैं।

Nijanand App

ऐसा इलम हकें भेजिया, आंखें खोल दई बातन।
एक जरा सक ना रही, देखे बका वतन।।५२ ।।

श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि की ऐसी तारतम वाणी भेज दी जिससे सब बातूनी भेद खुल गए और जरा भी संशय नहीं रहा तथा अखण्ड परमधाम की पहचान हो गई।

बेसक जान्या आपे अपना, बेसक जान्या हक।
बेसक जान्या हादीय को, उमत हुई बेसक।।५३ ।।

सबको अपनी पहचान, अपने धनी की पहचान, श्री श्यामा महारानी की पहचान तथा अपने सुन्दरसाथ की पहचान हो गई और सब संशय मिट गए।

ए याद नीके दीजियो, तुम देखो सहूर कर।
मेरे इलम से रूहों को, देवे साहेदी अंतर।।५४ ।।

हे श्यामाजी! तुम विचारकर रूहों को मेरी जागृत बुद्धि के ज्ञान से याद कराना और गवाहियां देकर सब बातों का भेद बताना।

बेसक इलम पोहोंचिया, के नाहीं पोहोंच्या तुम।
ए देखो दिल विचार के, तो न्यारा नहीं खसम।।५५ ।।

हे रूहो! तुम पर धनी का जागृत बुद्धि का बेशकी का इलम पहुंचा कि नहीं पहुंचा? यदि पहुंचा है तो दिल से विचार कर देखो। तुम्हारे धनी तुमसे जुदा नहीं हैं।

इलम पोहोंच्या होए तुमको, हमारा बेसक।
तो संदेसे तुमारे इत के, क्यों न पोहोंचें बका में हक।।५६ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि तुम्हें सब संशय मिटाने वाला जागृत बुद्धि का ज्ञान मिल गया है, तो तुम्हारे सन्देश खेल में से अखण्ड घर में क्यों नहीं पहुंचते?

किन ठौर छिपाए तुम को, बोलत हो कहां से।
कौन तरफ हो अर्स के, ए सहूर करो दिल में।।५७ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि देखो मैंने तुमको कहां छिपाया है? और कहां से बोल रहे हो? दिल से विचार कर देखो कि तुम परमधाम से किस तरफ हो?

देखो दिल से दसो दिस, किन तरफ हैं हक।
ए विचार देखो इलम को, तो जरा ना रहे सक।।५८ ।।

दिल से विचारकर दसों दिशाओं में देखो कि पारब्रह्म कहां है? इस बात को यदि वाणी से विचारोगे तो जरा भी संशय नहीं रहेगा।

कौन तरफ वजूद है, कौन तरफ है कौल।
हाल कौन तरफ का, कौन तरफ है फैल।।५९ ।।

तुम्हारा तन कहां है? वचन कहां के हैं? करनी कहां की करते हो? रहनी कहां की है?

Nijanand App

ए सब एक तरफ हैं, के जुदे जुदे दौड़त।
देखो सहूर करके, है कौन तरफ निसबत।। ६० ।।

तुम्हारी कहनी, करनी और रहनी एक पारब्रह्म की तरफ लगी है या अलग-अलग देवी-देवताओं को पूजती हैं? विचार कर देखो कि तुम्हारा सम्बन्ध किससे है?

जब एक ठौर पांचों भए, तब तुमारा इत का।
सत संदेसा हक को, क्यों न पोहोंचे माहें बका।। ६१ ।।

जब पांचों (मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार और जीव, अर्थात् कहनी, करनी, रहनी, तन और जीव) एक दिशा को चलेंगे तब संसार से तुम्हारा सन्देश श्री राजजी महाराज के पास पहुंच जाएगा।

इलम दिया तुमें खुदाई, तब बदले कौल चाल।
फैल होवे वाहेदत का, तब बेर न लगे हाल।। ६२ ।।

तुमको जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया जिससे तुम्हारी कहनी, करनी, रहनी परमधाम की हो जाएगी। तब हालात बदलने में एक पल नहीं लगेगा।

गुजरी अर्स बका मिने, मजकूर जो मुतलक।
सो इलम हकें ऐसा दिया, जिनमें जरा न सक।। ६३ ।।

अखण्ड परमधाम में श्री राजजी महाराज के सामने की हुई वार्तालाप में संशय नहीं रह जाएगा। ऐसा जागृत बुद्धि का ज्ञान तुमको धनी ने दिया है।

एही तुमारी भूल है, तुमें बंधन याही बात।
एही फरामोसी तुम को, जो भूल गए हक जात।। ६४ ।।

तुम्हारी भूल ही तुम्हें बंधन में बांधती है। यह बेसुधी जो तुम्हें आ रही है, उससे ही तुम परमधाम के सुन्दरसाथ को भूल गए हो।

कौल फैल जुदे हुए, हुआ फरामोसी हाल।
अब पड़े याहीं सक में, इन जुदागी के ख्याल।। ६५ ।।

कहनी और करनी जब अलग हो गईं तो तुम्हारी बेसुधी की हालत हो गई। श्री राजजी महाराज की जुदाई का ख्याल लेकर तुम संशय में पड़ गई हो।

सो ए इलम जब हक का, देत अर्स की याद।
तुमें बेसक गुजरे हाल की, क्यों न आवे कायम स्वाद। ६६ ।।

जब यह जागृत बुद्धि की वाणी धनी की याद दिलाएगी तब तुम्हें अपने भूले हुए अखण्ड सुखों की लज्जत क्यों नहीं आएगी?

फरामोसी कुलफ की, कुंजी इलम बेसक।
करो सहूर तुम रूह सों, जो बकसीस है हक।। ६७ ।।

फरामोशी के ताले को तारतम ज्ञान की कुंजी खोल देगी। श्री राजजी महाराज की इस अद्‌भुत बख्शीश की चर्चा तुम रूहों से करना।

Nijanand App

ए ऐसा इलम है लदुन्नी, जो देत बका की बूझ।
बेसकी सब देत है, और देत हक के दिल का गुझ।।६८ ।।

यह तारतम ज्ञान ऐसा है जिससे अखण्ड घर की पहचान होती है। यह श्री राजजी महाराज के दिल की छिपी बात का ज्ञान देता है।

ऐसी कुंजी हकें दई, जो सहूरें कुलफ लगाए।
तो फरामोसी क्यों रहे, पर हाथ हुकम जगाए।।६९ ।।

श्री राजजी महाराज ने ऐसी तारतम ज्ञान की कुंजी दी है जो तुम्हारे सोचने की शक्ति को लगे तालों को खोल देगी। तब यह फरामोशी क्यों रहेगी? पर इस तरह से जागना भी सब श्री राजजी महाराज के हुकम के हाथ है।

बैठे आगूं हक के, किया था मजकूर।
इंतहाए नहीं अर्स जिमी का, तुम कहूं नजीक हो के दूर।।७० ।।

तुमने श्री राजजी महाराज के चरणों में बैठकर यह वार्तालाप किया था। परमधाम की भूमि का शुमार नहीं है। अब तुम विचार करो कि तुम उसके पास हो कि दूर हो?

बाहेर तो ना जाए सको, छेह न आवे जिमी इन।
एक जरा जुदा न होए सके, तुमें ठौर न बका बिन।।७१ ।।

परमधाम की भूमि की सीमा तो बेशुमार है, इसलिए तुम परमधाम से बाहर तो जा नहीं सकते। परमधाम का कोई तिनका भी अलग नहीं हो सकता, इसलिए तुम्हें अखण्ड घर के बिना और कहीं ठिकाना नहीं है।

हक संदेसे लेत हो, कौन तरफ तुमसों हक।
आया इलम खुदाई तुम पे, तिनमें जरा न सक।।७२ ।।

तुम श्री राजजी महाराज के सन्देश लेते हो तो बताओ श्री राजजी महाराज तुम से किस तरफ हैं? क्या इतना ज्ञान है? तुमको तारतम ज्ञान मिला यह बात सत्य है। इसमें जरा भी सन्देह नहीं है।

तुमें अर्स देखाया दिल में, जो खोलो ले कुंजी सहूर।
कुलफ फरामोसी ना रहे, अर्स दिल हक हजूर।।७३ ।।

तुमको धनी का अर्श परमधाम तुम्हारे दिल में दिखाया। तारतम कुंजी से इसका विचार करके देखो। फिर तुम्हारे दिल में फरामोशी का ताला लगा नहीं रहेगा, क्योंकि तुम्हारे दिल में तो स्वयं श्री राजजी महाराज विराजमान हैं।

बिना विचारे रेहेत है, तुम पे हक इलम।
ए सहूर रूहें पोहोंचहीं, तबहीं उड़े तिलसम।।७४ ।।

तुम्हारे पास जागृत बुद्धि की तारतम वाणी है। तुम उसको मंथन नहीं करते हो (विचारते ही नहीं हो)। यदि उस पर विचार कर लो तो यह माया का फंदा उड़ जाएगा।

तीन उमत कही खेल में, एक रूहें और फरिस्ते।
तीसरी खलक आम जो, ए सब लरें सरीयत जे।।७५ ।।

खेल में तीन प्रकार की सृष्टि हैं। एक रूहें, दूसरे फरिश्ते और तीसरी आम खलक (ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरी-सृष्टि और जीवसृष्टि) और सब रीति-रिवाज, कर्मकाण्ड में आपस में लड़ते हैं।

Nijanand App

कुंन से और नूर से, ए दोऊ पैदास।
रूहें उतरीं अर्स अजीम से, कही असल खासल खास।।७६ ।।

कुंन से जीवसृष्टि और नूर (अक्षर) से ईश्वरीसृष्टि की पैदाइश कही है। ब्रह्मसृष्टि परमधाम से उतरी है जो श्री राजजी महाराज की खासल खास अंगना कही है।

ए इलम-इलाही देत हों, तो भी छूटत नहीं तिलसम।
हकें पेहेले कह्या भूलोगे, न मानोगे हुकम।।७७ ।।

ऐसा जागृत बुद्धि का ब्रह्म ज्ञान तुमको देता हूं फिर भी माया तुमसे नहीं छूटती। श्री राजजी महाराज ने पहले से ही कहा था कि ब्रह्मसृष्टि हुकम को नहीं मानेगी।

सोई बातें अब मिली, भूल गैयां घर तुम।
भूली आप और हक को, भूलियां अकल इलम।।७८ ।।

वह सब बातें यहां आने पर सत दिखाई पड़ीं और ब्रह्मसृष्टियां घर को, अपने आपको, श्री राजजी को, अक्ल को और इलम को भूल गईं।

फुरमान रसूल ले आइया, रूहअल्ला संदेसे।
असल इलम दे दे थके, अजूं न आवे अकल में ए।।७९ ।।

रसूल साहब कुरान ले आए और श्यामा महारानी सन्देश ले आईं और सच्चा ज्ञान दे देकर थक गईं। हाय! हाय! फिर भी यह बातें अक्ल में नहीं आतीं।

कही बड़ी मेहेर रसूलें, जो हुई माहें रात मेयराज।
फजर होसी जाहेर, सो रोज कयामत है आज।।८० ।।

रसूल साहब ने मेयराज (दर्शन) की रात्रि में पारब्रह्म से जो बातें हुईं, उन बातों में श्री राजजी महाराज की मेहर अपार है, बताया। और कहा कि यह सब बातें सवेरा होने पर जाहिर हो जाएंगी। यह वही कयामत का दिन आज है।

तो मजकूर मेयराज का, ए जो किया जाहेर मेहेरबान।
मोमिन देखो हक सहूर से, खोली मारफत-फजर सुभान।।८१ ।।

मेयराज (दर्शन) की रात की श्री राजजी महाराज ने हकीकत को जाहिर किया। हे मोमिनो! उसको विचार कर देखो। धनी ने (श्री राजजी महाराज ने) पहचान कराकर ज्ञान का सवेरा कर दिया।

महामत कहे ऐ मोमिनों, अजूं फरामोसी न जात।
बेसक देखो दिन बका, माहें मेयराज की रात।।८२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम्हारी फरामोशी अभी तक नहीं जाती। निःसन्देह उस अखण्ड परमधाम को देख लो जिसका वर्णन मेयराज की रात्रि में किया है।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ९५८ ।।

मेहेर हुई महंमद पर, खोले नूरतजल्ला द्वार।
सब मेयराज में लेय के, दिया हकें दीदार।। १ ।।

श्री राजजी महाराज ने मुहम्मद साहब पर कृपा की और उन्हें शबे मेयराज में बुलाकर दर्शन दिया और परमधाम के दरवाजे खोले।

Nijanand App